पुनरावृत्ति कार्य पत्रिका के उत्तर

कक्षा–10

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–1

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

I. 1. (घ) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ग) 5. (घ)

II. 1. (क) 2. (ख) 3. (ख) 4. (घ) 5. (घ)

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–2

उत्तर–

I. **(1)** मंदिरों, मसजिदों, गुरुद्वारों या चर्च में बढ़ती भीड़ और प्रचार माध्यमों द्वारा मेलों और पर्वों के व्यापक कवरेज वस्तुतः आस्था के प्रतीक नहीं हैं बल्कि आस्था के संदर्भ में भ्रम पैदा करनेवाले हैं।

(2) लेखक की दृष्टि में गांधी को लोगों ने बाह्य आवरण से समझा है जिसके परिणामस्वरूप दो अक्टूबर और तीस जनवरी को लोग कुछ आडंबर करते चले आ रहे हैं।

(3) जिन जीवन-मूल्यों को अपने जीवन में उतारना चाहिए था, उनके लिए मात्र आस्थावान होने की सौगंध खाना सच्ची आस्था नहीं है। गांधी जी के सिंद्धांतों का लेशमात्र प्रभाव भी लोगों के जीवन पर दिखाई नहीं देता, फिर उनके नाम की दुहाई देना आडंबर ही तो है।

(4) लेखक की दृष्टि में 'लगे रहो मुन्ना भाई' की गांधीगिरी एक सिनेमाई कथानक के सिवाय कुछ भी नहीं है। फिल्म उतरी और उसका प्रभाव खत्म।

(5) मुन्नाभाई की गांधीगिरी की तुलना लेखक ने आस्थाहीनता से की है।

(6) **शीर्षक:** गांधीगिरी।

II. **(1)** दूसरों के अवगुणों पर ध्यान देने एवं ईर्ष्या की दुष्प्रवृत्तियों के परिणामस्वरूप मनुष्य इस तथ्य को भुला देता है कि ईर्ष्या का दाहक

स्वरूप स्वयं उसके समय, स्वास्थ्य और सद्वृत्तियों के लिए कितना विनाशकारी सिद्ध हो रहा है।

(2) सामान्य जन सारा जीवन आत्मनिरीक्षण को भुलाकर परछिद्रान्वेषण में ही लगा रहा है। इसका मूल कारण है– उसकी ईर्ष्या की दाहक दुष्प्रवृत्ति। दूसरे की उन्नति को वह अपनी ईर्ष्या के कारण पचा नहीं पाता और उसके गुणों पर ध्यान न देकर केवल उसके अवगुणों को ही प्रचारित करने लगता है।

(3) हमारे शास्त्रों में परनिंदा को पाप बताया गया है। इससे मुक्ति का उपाय है कि व्यक्ति को दूसरों के दोषों को न देखकर अपने दुर्गुणों एवं अपनी कमजोरियों की ओर देखना चाहिए तथा उन्हें दूर करने की कोशिश करनी चाहिए।

(4) मनुष्य की दृष्टि सदा दूसरों की बुराइयों पर पड़ती है। इसके मूल में उसकी ईर्ष्या की दाहक दुष्प्रवृत्तियाँ कार्यशील रहती हैं। ईर्ष्यावश मनुष्य दूसरों की उन्नति को पचा नहीं पाता तथा वह दूसरों के दोषों तथा दुर्गुणों को ही प्रचारित करने लगता है।

(5) उपसर्ग : दुः, **मूल शब्द :** प्रवृत्ति

(6) शीर्षक : परनिंदा।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–3

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

I.	1. (ग)	2. (क)	3. (ख)	4. (ग)	5. (घ)
II.	1. (घ)	2. (घ)	3. (घ)	4. (ग)	5. (ग)

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–4

उत्तर–

I. **(1)** लक्ष्य-पथ पर आगे बढ़ते समय जिस-जिस हमराही से प्रेम मिला, उन सभी हमराहियों को कवि धन्यवाद दे रहा है।

(2) कवि के अनुसार जीवन अस्थिर, अनजाना, नश्वर, चंचल, क्षणभंगुर और नाना प्रकार की बाधाओं से भरा पड़ा है।

(3) कवि पथिक को नश्वर और पथ को अमर कह रहा है।
(4) कवि के अनुसार जो राह में आनेवाली परिस्थितियों से अवगत होते हैं, वही जीवन-पथ पर चल पाते हैं।
(5) **शीर्षक :** जिस-जिस से पथ पर स्नेह मिला।

II. (1) कवि अपने सभी सुखों का कारण मातृभूमि को मान रहे हैं।
(2) कवि मातृभूमि के प्रत्युपकार की बात कर रहे हैं।
(3) कवि के अनुसार उसका शरीर मातृभूमि की मिट्टी से ही निर्मित है।
(4) कवि प्रस्तुत काव्यांश में कहते हैं कि इस शरीर को अंत में मातृभूमि ही अपनाएगी।
(5) **शीर्षक :** मातृभूमि

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–5

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग)	2. (क)	3. (घ)	4. (क)	5. (ख)
6. (घ)	7. (क)	8. (क)	9. (ख)	10. (ग)
11. (क)	12. (ग)	13. (घ)	14. (ख)	15. (ग)
16. (घ)	17. (ग)	18. (ग)		

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–6

उत्तर–

1. एक क्रिया पदबंधवाले वाक्य 'सरल वाक्य' कहलाते हैं तथा जिन वाक्यों में एक से अधिक क्रिया पदबंध होते हैं, उन्हें जटिल वाक्य कहते हैं। जटिल वाक्यों के दो उपभेद होते हैं– संयुक्त वाक्य तथा मिश्र वाक्य। देखिए दोनों के उदाहरण–

   सरल वाक्य: उस काले कोटवाले व्यक्ति को यह पुस्तक दे दीजिए।

   जटिल वाक्य: तुम चलो, मैं आता हूँ, (संयुक्त वाक्य)

   उस बच्चे को मिठाई दे दो, जो बहुत भूखा है। (मिश्र वाक्य)

2. (क) ☑ (ख) ☒ (ग) ☑ (घ) ☒

3. (क) प्रधान उपवाक्य (ख) विशेषण उपवाक्य

(ग) कालवाची क्रियाविशेषण उपवाक्य
(घ) कारणवाची क्रियाविशेषण उपवाक्य
(ङ) समानाधिकृत या स्वतंत्र उपवाक्य
(च) रीतिवाची क्रियाविशेषण उपवाक्य

4. (क) सरल वाक्य (ख) मिश्र वाक्य
(ग) संयुक्त वाक्य (घ) मिश्र वाक्य
(ङ) मिश्र वाक्य

5. (क) मैंने वह मकान बेच दिया, जो पुराना था।
(ख) त्रिपाठी को तो सज़ा मिलेगी ही पांडे को भी सज़ा मिलेगी।
(ग) हमारे बहुत समझाने पर भी वह न मानी
(घ) मेरी बात मानो और हर मुसीबत से बचो।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–7

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग)	2. (क)	3. (ख)	4. (ग)	5. (घ)
6. (ख)	7. (ख)	8. (ग)	9. (ग)	10. (ग)
11. (घ)	12. (क)	13. (ख)	14. (ख)	15. (ग)
16. (क)	17. (ग)	18. (ग)		

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–8

उत्तर–

1. (क) ☒ (ख) ☑ (ग) ☒ (घ) ☑
2. (क) कर्तृवाच्य (ख) भाववाच्य (ग) कर्मवाच्य (घ) कर्तृवाच्य
3. (क) कर्तृवाच्य:
   (*i*) आइए और मेरे साथ लंच कीजिए।
   (*ii*) तुम किताबें लेकर जाना।
   (ख) कर्मवाच्य:
   (*i*) मुझसे गाना नहीं सुनाया गया। (*ii*) मजदूरों से पेड़ नहीं कटा।
   (ग) भाववाच्य:
   (*i*) उससे गर्मियों में नहीं दौड़ा जाता। (*ii*) माता जी से नहीं उठा गया।

4. **(क)** उसके द्वारा शादी नहीं की जाएगी।
   (ख) उससे कभी झूठ नहीं बोला जाता।
   (ग) आपके द्वारा लिखी गयीं सारी कविताएँ बहुत सुंदर हैं।
   (घ) नाश्ते के बाद उससे नहीं चला जाता।
   (ङ) मेरे द्वारा आपका काम कर दिया गया है।
   (च) मुझसे उससे बात तक न की जा सकी।
5. **(क)** कुत्तों द्वारा आज नहीं भौंका जा रहा।
   (ख) आज उन लोगों से नहीं नहाया जा रहा।
   (ग) घोड़े द्वारा ज़ोर से हिनहिनाया गया।
   (घ) आप लोगों द्वारा क्यों हँसा जा रहा है?
   (ङ) हम लोगों द्वारा सारी रात नहीं सोया जा सका।
   (च) आपके द्वारा झूठ न बोला जाए तो अच्छा है।
6. **(क)** माँ ने काम नहीं किया। **(ख)** रोगी ने दवाई नहीं पी।
   (ग) बच्चे एक जगह नहीं बैठते। **(घ)** प्रधानमंत्री ने भाषण दिया।
   (ङ) लड़कियों ने गीत गाए। **(च)** आपने कहानी क्यों नहीं सुनाई?

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–9

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर–

1. (ग)	2. (क)	3. (ग)	4. (घ)	5. (ख)
6. (क)	7. (ग)	8. (ख)	9. (क)	10. (ग)
11. (क)	12. (ख)	13. (क)	14. (घ)	15. (ख)
16. (क)	17. (ख)	18. (घ)		

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–10

उत्तर–

1. **साड़ी :** जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्म कारक में, 'लाना' क्रिया के प्रत्यक्ष/मुख्य कर्म का प्रकार्य।
2. **सोना :** जातिवाचक संज्ञा (द्रव्यवाचक), पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक में, 'सस्ता होना' क्रिया के व्याकरणिक कर्ता का प्रकार्य।

3. **उसे :** अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, कर्म कारक में, 'बुलाना' क्रिया के अप्रत्यक्ष कर्म का प्रकार्य।

4. **कुछ :** अनिश्चयवाचक परिणामवाची सर्वनाम, कर्म कारक में, 'देना' क्रिया के प्रत्यक्ष कर्म का प्रकार्य।

5. **अपने-आप :** निजवाचक सर्वनाम, एकवचन, कर्ता कारक में, 'मैं' सर्वनाम पर बल देने का प्रकार्य।

6. **बड़ा :** गुणवाचक विशेषण, पुल्लिग, एकवचन, 'बेटा' विशेष्य की विशेषता बताने का प्रकार्य।

7. **आपकी :** सार्वनामिक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'दुकान' विशेष्य की विशेषता बताने का प्रकार्य।

8. **चलती :** क्रियात्मक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'गाड़ी' विशेष्य की विशेषता बताने का प्रकार्य।

9. **झुठला रहे हो :** नामिक क्रिया, मुख्य क्रिया अंश–झुठला(ना), सहायक क्रिया अंश–'रहे हो', वर्तमान काल, सातत्यबोधक पक्ष, बहुवचन (प्रयोग के आधार पर एकवचन) मध्यम पुरुष, कर्तृवाच्य, कर्तरि प्रयोग।

10. **चल-फिर सकती है :** सामासिक क्रिया, मुख्य क्रिया अंश–चल(ना) –फिर(ना), सहायक क्रिया अंश–'सकती है' सामर्थ्यसूचक वृत्ति, अन्य पुरुष, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्तृवाच्य, कर्तरि प्रयोग।

11. **दौड़कर :** प्रकार्यात्मक क्रियाविशेषण, रीतिवाचक, 'आना' क्रिया के घटित होने की रीतिगत विशेषता बताने का प्रकार्य।

12. **पैदल :** रीतिवाची क्रियाविशेषण, 'जाना' क्रिया की रीति संबंधी विशेषता बताने का प्रकार्य।

13. **का :** संबंधबोधक अव्यय, 'अर्णव' तथा 'भाई' संज्ञा पदों के बीच संबंध बताने का प्रकार्य।

14. **या :** समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय, दो समानाधिकृत उपवाक्यों के बीच विकल्प दिखाने का प्रकार्य।

15. **छि:! :** विस्मयादिबोधक अव्यय, घृणा का भाव प्रकट करने का प्रकार्य।

16. **तो :** निपात, 'नौकरी' संज्ञा पद पर बल देने का प्रकार्य।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–11

1. 1. (क) 2. (घ) 3. (ख) 4. (घ) 5. (क)

2. 1. (क) 2. (क) 3. (ग) 4. (क) 5. (ग)

3. 1. (क) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ग) 5. (घ)
6. (घ) 7. (ख) 8. (ग)

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–12

उत्तर–

1. (क) शब्दालंकार तथा अर्थालंकार में अंतर (देखें, पृष्ठ सं० - 50)

(ख) उत्प्रेक्षा और मानवीकरण अलंकार में अंतर–

उत्प्रेक्षा	मानवीकरण
'जहाँ प्रस्तुत पर अप्रस्तुत की संभावना व्यक्त की जाती है वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है; जैसे– 'सोहत ओढ़े पीत पट, श्याम सलोने गात। मनहुँ नीलमणि सैल पर श्याम सलोने गाता।	जहाँ प्रकृति का वर्णन मानव या मानवी स्वरूप में किया जाता है, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है; जैसे– उषा सुनहले तीर बरसाती, जयलक्ष्मी-सी उदित हुई।

2. कवि जब अपने काव्य में अर्थ के स्तर पर सौंदर्य उत्पन्न करता है तब वहाँ अर्थालंकार की व्युत्पत्ति होती है।

उदाहरण – कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
हिमकणों से पूर्ण मानों हो गए पंकज नए।

3. श्लेष – मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परै, स्यामु हरित दुति होय।।

उत्प्रेक्षा – सिर फट गया उसका वहीं, मानो अरुण रंग का घड़ा।

अतिशयोक्ति – मुख बाल रवि सम लाल होकर
ज्वाल-सा बोधित हुआ।

मानवीकरण – साकेत-शैय्या पर दुग्ध-धवल
तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विरल
लेटी है शांत, क्लांत, निश्चल।

4. (क) श्लेष अलंकार (ख) उत्प्रेक्षा अलंकार
(ग) मानवीकरण अलंकार (घ) श्लेष अलंकार
(ङ) उत्प्रेक्षा अलंकार (च) अतिशयोक्ति अलंकार
(छ) मानवीकरण अलंकार (ज) मानवीकरण अलंकार

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–13

उत्तर–

1. (क) **बाल मज़दूरी : एक अभिशाप**

14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से काम कराया जाना बाल मज़दूरी कहलाता है। यह देखा गया है कि विकासशील देशों में गरीब माँ-बाप मजबूरी में अपने बच्चों को उनकी इच्छा के विरुद्ध काम पर लगा देते हैं। अत: इन बच्चों से बहुत ही कम पैसों में काम करवाया जाता है। ये बच्चे भी शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, अपने दोस्तों के साथ खेलना चाहते हैं और दूसरे अमीर बच्चों की तरह अपने माता-पिता का प्यार और परवरिश पाना चाहते हैं, लेकिन दुर्भाग्यवश इन्हें अपनी हर इच्छा का गला घोंटना पड़ता है। कहने का तात्पर्य यही है कि सभी विकासशील देशों में बाल मज़दूरी का प्रमुख कारण गरीबी है। समाज से इस बुराई को जड़ से मिटाने के लिए समाज और सरकार दोनों को कड़े कदम उठाने होंगे। गरीब परिवारों के लिए ऐसी योजनाएँ आरंभ करनी होंगी, जिनसे उनकी आर्थिक स्थिति बेहतर हो सके ताकि वे मजबूरी में अपने छोटे-छोटे मासूम बच्चों को मज़दूर बनाने के लिए मजबूर न हों। हमें यह ध्यान रखना होगा कि बाल मज़दूरी एक सामाजिक अभिशाप है तथा समाज में बढ़ते अपराधों का एक बड़ा कारण भी है।

(ख) **ई-कचरा**

ई-कचरा उन उपकरणों को कहा जाता है, जिनके खराब होने पर

उनके स्थान पर नए उपकरण लगाकर उन्हें फेंक दिया जाता है। ये निष्प्रयोजन खराब उपकरण ही ई-कचरा कहलाते हैं; जैसे– बेकार कंप्यूटर, मोबाइल, प्रिंटर्स, फ़ोटोकॉपी तथा कैमरा आदि का कचरा। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, नई दिल्ली के अनुसार प्रतिवर्ष ई-कचरे की मात्रा बढ़ती जा रही है। बदलती जीवन-शैली और शहरीकरण की वजह से ई-कचरा और तेज़ी से बढ़ रहा है। इसके खतरे से अभी हम बेखबर हैं। वस्तुतः ई-कचरे से निकलनेवाले रासायनिक तत्व किडनी, लीवर को प्रभावित करने के साथ-साथ कैंसर और लकवा जैसी जानलेवा बीमारियों की भी वजह बन रहे हैं। इन बीमारियों का खतरा उन विशेष क्षेत्रों में ज़्यादा होता है जहाँ अवैज्ञानिक तरीके से ई-कचरे का पुनःचक्रण किया जाता है। इससे निकलनेवाले ज़हरीले तत्व एवं गैसें मिट्टी और पानी में मिलकर उन्हें क्रमश बंजर और ज़हरीला बना देते हैं। भारत में यह समस्या 1990 के दशक से उभरने लगी थी, किंतु इस समस्या से बचने के लिए सरकारों ने कोई ठोस कदम नहीं उठाया। वस्तुतः इनकी पुनःचक्रण की प्रक्रिया भी बहुत जटिल है। साथ-साथ बहुत कारगर भी नहीं है। इससे बचने का सबसे कारगर उपाय है– इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं का कम-से-कम उपयोग करना।

(ग) **शिक्षा का व्यवसायीकरण**

'शिक्षा का व्यवसायीकरण' के दो स्वरूप हैं– पहला, पाठ्यक्रम का व्यवसाय केंद्रित होना और दूसरा, शिक्षा संस्थानों का संचालन किसी व्यवसायी के द्वारा होना। पाठ्यक्रम का व्यवसायपरक होना बहुत हद तक जायज़ है, किंतु मात्र रुपये कमाने की अंधी दौड़ में छात्रों को झोंक देना भी पूर्णतया राष्ट्रहित के लिए खतरा है। ऐसे में प्रेम, सौहार्द और देशप्रेम जैसी बातें गौण हो जाएँगी। जहाँ तक शिक्षा संस्थानों के व्यवसायीकरण की बात है, यह हमारी वर्तमान शिक्षा-प्रणाली के अवमूल्यन का सबसे बड़ा कारण है। भारतीय परंपरानुसार शिक्षा उपहारस्वरूप दी जाती थी, किंतु आज व्यवसाय की वस्तु बन गई है। ज्ञानदान की पुण्य परंपरा थी, जो आज पैसा एकत्र करने की योजना बनकर रह गई है। इसका दुष्प्रभाव प्रतिभावान छात्रों पर पड़ रहा है। शिक्षा की गुणवत्ता जिन निजी शिक्षण संस्थानों में है, उनकी फ़ीस इतनी अधिक है कि प्रतिभावान होते हुए भी सामान्य परिवार के बच्चे

उसमें अपना दाखिला नहीं करा सकते। यही आज की शिक्षा पद्धति का सबसे बड़ा दुष्परिणाम है। प्रतिभावान छात्रों का हक मारा जा रहा है। उनके स्थान पर आर्थिक रूप से संपन्न बच्चे काबिज होते जा रहे हैं। इसकी रोकथाम के लिए सरकार को गंभीरता से सोचने की ज़रूरत है। सार्वजनिक शिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता सुधारने और नए-नए संस्थानों को स्थापित करने पर सरकारों को ध्यान केंद्रित करना होगा। साथ-साथ निजी स्वामित्व वाले शिक्षण संस्थानों पर अंकुश लगाने की सख्त ज़रूरत है।

2. (क) **इंटरनेट**

आधुनिक युग वैज्ञानिक युग है। विज्ञान ने मानव को असीम शक्तियाँ देकर उसके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिया है। विज्ञान की उपलब्धियों में कंप्यूटर व इंटरनेट का विशेष स्थान है। समस्त विश्व में तकनीकी क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति हुई है जिसका परिणाम इंटरनेट भी है। प्रत्येक विषय से जुड़ी जानकारी हमें इंटरनेट द्वारा आसानी से प्राप्त हो जाती है। चाहे वह पढ़ाई से संबंधित हो या मनोरंजन से जुड़ा विषय, सबकी जानकारी तुरंत प्राप्त हो जाती है। आज इंटरनेट ने व्यक्ति को पंक्तियों में कई-कई घंटों खड़े होकर बिजली के बिल जमा करने में, रेलवे बुकिंग में, हवाई यात्रा बुकिंग में होने वाली समय की बरबादी से बचाया है। इंटरनेट द्वारा पत्र व संदेश भी भेजे जा सकते हैं। ई-मेल द्वारा हम घर बैठे ही अपने मित्रों, सगे-संबंधियों व विभिन्न संस्थानों से पत्र-व्यवहार कर सकते हैं। आज बोर्ड की कक्षाओं के विद्यार्थी विद्यालय में परीक्षा परिणाम पहुँचने से पहले ही इंटरनेट पर उसे जान लेते हैं। किंतु आज इंटरनेट अपने साथ हमारे जीवन में समस्याएँ भी लेकर आया है। इंटरनेट द्वारा नए प्रकार के अपराधों का जन्म हुआ है। साइबर क्राइम या इसके माध्यम से चोरी करने वालों को हैकर्स कहा जाता है। इन अपराधियों को पकड़ने के लिए सरकार कानून बना रही है। इस प्रकार यह मानव पर निर्भर करता है कि वह विज्ञान के इस महत्वपूर्ण देन का सदुपयोग कर उसको वरदान सिद्ध करता है या दुरुपयोग कर अभिशाप।

(ख) **शिक्षक दिवस**

महान शिक्षाविद् और भारत के दूसरे राष्ट्रपति श्री सर्वपल्ली राधाकृष्णन

जी का जन्म 5 सितंबर को हुआ था। शिक्षा के क्षेत्र में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। इन्होंने कहा था–"एक शिक्षक का दिमाग किसी भी राष्ट्र का बेहतरीन दिमाग होता है।" इस प्रकार इनके द्वारा समय-समय पर छात्रों को मार्गदर्शन देने एवं शिक्षकों की भूमिका को रेखांकित करने की वजह से इनके जन्म दिवस 5 सितंबर, 1962 को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। आज के दिन शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों के कर्तव्य का निर्वहन एवं उसकी व्यवस्था शिक्षार्थियों द्वारा की जाती है। बहुत इंतज़ार के बाद इस वर्ष मुझे शिक्षक दिवस पर अपने विद्यालय में हिंदी शिक्षक की भूमिका निभाने का अवसर प्राप्त हुआ। शिक्षक के रूप में जब मैं पूर्व निर्धारित कक्षा में पहुँचा तो बच्चों ने पूरी कक्षा को सिर पर उठा रखा था। उस दिन एहसास हुआ कि विद्यार्थियों को सही मार्गदर्शन देने के लिए शिक्षक को कितने संयम एवं धैर्य से काम लेना पड़ता है। इस घटना ने शिक्षक के प्रति मेरे नज़रिए को पूरी तरह से बदल दिया। उस दिन शिक्षक के प्रति श्रद्धा के साथ-साथ विद्यार्थी का कर्तव्यबोध भी हुआ। निस्संदेह शिक्षक एक विशाल हृदय का स्वामी होता है, जो सिर्फ़ शिक्षा ही नहीं देता बल्कि दुनिया की समझदारी और सही-गलत का अंतर भी बताता है।

(ग) **सच्चा मित्र**

सच्ची मित्रता अनमोल धन है। इसकी तुलना किसी भी संबंध से नहीं की जा सकती। वस्तुतः सच्चा मित्र वही होता है, जो दुख के समय चट्टान की तरह आपके साथ खड़ा रहे। इस वर्तमान परिवेश में इस प्रकार के मित्र का मिलना असंभव तो नहीं, किंतु कठिन कार्य अवश्य है। रामचंद्र शुक्ल के कथनानुसार–"सच्ची मित्रता में उत्तम वैद्य की-सी निपुणता और परख होती है। मातृत्व से ओत-प्रोत माँ का-सा धैर्य और कोमलता होती है।" एक सच्चा मित्र हमें सकारात्मक कर्म करने के लिए प्रेरित करता है और उसमें सहायक बनकर साथ खड़ा रहता है। साथ-साथ वह हमें कुमार्ग पर चलने से रोकता है। अतः सच्चा मित्र औषधि के समान होता है। वह हमारी समस्त विकृतियों को दूर करने में अहम भूमिका अदा

करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सच्ची मित्रता मनुष्य के लिए वरदान है।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–14

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–15

उत्तर–

1. परीक्षा भवन
   क०ख०ग० विद्यालय
   नई दिल्ली।
   12 जून, 20xx
   प्रिय मित्र दिनेश
   सादर नमस्कार।
   तुम्हारा पत्र मिला। तुम सपरिवार सकुशल हो, यह जानकार अति प्रसन्नता हुई, किंतु यह प्रसन्नता तब और बढ़ गई जब यह मालूम हुआ कि तुम्हारे बड़े भैया को एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में एक अच्छी नौकरी मिल गई हैं। दिनेश, महेश भैया को मैं काफी दिनों से जानता हूँ। प्रतिभा लगन और आत्मविश्वास उनमें कूट-कूटकर भरा है। उनका अकादमिक रिकॉर्ड भी उत्कृष्ट रहा है। सभी शैक्षणिक परीक्षाएँ उन्होंने प्रथम श्रेणी में पास की हैं। इस शानदार उपलब्धि का तो प्रतिफल उन्हें मिलना ही था।
   मेरी तरफ से महेश भैया को बहुत-बहुत बधाई। घर में बड़ो को प्रणाम तथा छोटों को शुभ आशीर्वाद। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में।
   तुम्हारा अभिन्न मित्र
   य०र०ल०

   अथवा

   परीक्षा भवन
   क०ख०ग० विद्यालय
   नई दिल्ली।

16 नवंबर 20XX

प्रिय पवन

सप्रेम नमस्कार।

मैं यहाँ कुशलतापूर्वक हूँ तथा आशा करता हूँ कि तुम भी सपरिवार सानंद होगे। परीक्षा की तैयारी में व्यस्त होने के कारण काफी दिनों से मैं तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया, इसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ। पवन, तुम्हें यह जानकार अति प्रसन्नता होगी कि मेरे बड़े भैया की शादी अगले महीने की 25 तारीख को होनी सुनिश्चित हुई है।

इस अवसर पर पूरे परिवार समेत तुम्हारी उपस्थिति अनिवार्य है। तुम्हारे साथ और कौन-कौन आएँगे, इसकी सूचना मुझे अविलंव देना, ताकि समयानुसार सबका आरक्षण करवा सकूँ।

घर में माता-पिता को मेरा प्रणाम तथा नयन और नम्रता को मेरा शुभाशीष कहना।

तुम्हारा मित्र

य०र०ल०

2. परीक्षा भवन

नई दिल्ली।

20 सितंबर, 20XX

सेवा में

प्रधानाचार्य जी

क०ख०ग० विद्यालय

नई दिल्ली।

विषयः प्रयोगशाला को अत्याधुनिक बनाने के संबंध में।

महोदय

विनम्र निवेदन है कि मैं इस विद्यालय की दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। हमारा विद्यालय पठन-पाठन तथा उत्तम शैक्षणिक माहौल के लिए जाना जाता है। किंतु हमारे विद्यालय की प्रयोशाला में अपेक्षित सुविधाओं की कुछ कमी है। खासतौर से प्रयोगशाला में प्रयोग किए जानेवाले अत्याधुनिक संयंत्रों की काफी कमी है। आज के युग में नवीन प्रयोग और अनुसंधान के लिए प्रयोगशाला की सामग्री का अत्याधुनिक तथा स्तरीय होना बहुत ही आवश्यक है।

अत: श्रीमान से प्रार्थना हैं कि विद्यालय की प्रयोगशाला को स्तरीय बनाने हेतु इसे अत्याधुनिक संयंत्रों तथा सामग्रियों से लैस किया जाए, ताकि छात्रगण इसका अधिकाधिक लाभ उठा सकें।

धन्यवाद सहित

आपका आज्ञाकारी छात्र

य०र०ल०

कक्षा दशम 'अ'

अथवा

अ०ब०स० कॉलोनी

नई दिल्ली।

12 सितंबर, 20XX

सेवा में

राजस्व अधिकारी महोदय

कृष्ण कुंज क्षेत्र, दिल्ली नगर निगम

नई दिल्ली।

विषय: गृह-कर जमा करने के बाद भी नोटिस मिलने के संबंध में।

मान्यवर

मैं लक्ष्मीनगर (कृष्ण कुंज) का निवासी हूँ। मैंने विगत महीने में अपने मकान का गृह-कर आपके कार्यालय में जमा कर दिया था, जिसकी पावती रसीद मेरे पास है। इसके बावजूद पिछले दिनों मुझे गृह-कर जमा करने का नोटिस आपके कार्यालय द्वारा भेज दिया गया। आपके कार्यालय की इस लापरवाही से मैं हैरान और चकित हूँ। आखिर इस प्रकार की चूक कैसे हो सकती है! मैं अपने गृह-कर जमा करने संबंधी कागजात की छाया-प्रति इस पत्र के साथ संलग्न कर रहा हूँ।

अत: श्रीमान से अनुरोध है कि इस त्रुटि को अविलंब सुधारकर मुझे इसकी सूचना दी जाए।

धन्यवाद सहित

भवदीय

क०ख०ग०

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–16

उत्तर–

1. परीक्षा भवन

नई दिल्ली।

21 जुलाई, 20XX

प्रिय अभय

सप्रेम नमस्ते।

मै यहाँ सपरिवार सकुशल हूँ तथा आशा करता हूँ कि वहाँ तुम भी सपरिवार कुशलतापूर्वक होगे। अभय, मैं जानता हूँ कि क्रिकेट खेल में तुम्हारी बहुत दिलचस्पी है। इसलिए तुम्हें एक खुशखबरी देने जा रहा हूँ। आगामी 12 दिसंबर को मेरे गृह नगर कानपुर में भारत एवं आस्ट्रेलिया के बीच एकदिवसीय क्रिकेट मैच होना है।

मेरी परीक्षा समाप्त हो चुकी है तथा मैं परसों कानपुर जा रहा हूँ। चूँकि मेरे पिता जी कानपुर क्रिकेट ऐसोसिएशन के सदस्य हैं, इसलिए उन्हें दो पास मिले हैं। हम दोनों इस पास का लाभ उठाएँगे। मेरे पिता जी ने भी मुझसे तुम्हें बुलाने को कहा हैं। इसलिए तुम मैच की तिथि के एक–दो दिन पहले कानपुर चले आना। मै। तुम्हारा इंतज़ार करूँगा। आने की सूचना अगले पत्र में अवश्य देना।

मेरी तरफ से अपने माता–पिता को प्रणाम तथा छोटों को शुभ आशीष बोल देना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र

य०र०ल०

अथवा

परीक्षा भवन

क०ख०ग० विद्यालय

सी.आर. पार्क, नई दिल्ली।

15 सितंबर 20XX

प्रिय अनुजा

शुभाशीर्वाद।

मैं यहाँ सकुशल रहकर आशा करता हूँ कि तुम भी स्वस्थ एवं सकुशल होगी। पिछले सप्ताह पिता जी के पत्र से ज्ञात हुआ कि तुम प्रात:काल देर से उठती हो। हो सकता है कि तुम देर रात तक जागकर पढ़ाई करती हो। यह भी पता चला कि तुम्हारा स्वास्थ्य भी कुछ खराब-सा रहता है। इसके लिए मैं तुम्हें सीधा एवं सरल उपाय बताता हूँ– प्रात:काल का भ्रमण, जिसके लिए कोई पैसा खर्च करने की आवश्यकता नहीं होती है।

प्रात:काल पूर्व में सूर्योदय की लालिमा मन को अच्छी लगती है। इस समय मंद-मंद बहती शीतल बयार सारा आलस्य हर लेती है। पक्षियों का कलरव हमारी नींद भगा देता है। ओसयुक्त घास पर चलने से मन प्रसन्न होता है तथा हमारे नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। खिले-खिले फूल हमें उल्लास एवं स्फूर्ति से भर देते हैं। प्राचीन काल में ऋषियों-मुनियों के स्वस्थ एवं दीर्घायु होने का रहस्य उनका ब्रह्ममुहूर्त में उठकर भ्रमण करना था। जो व्यक्ति नियमित प्रात:काल भ्रमण करता है, वह स्वस्थ, बलवान तथा बुद्धिमान बनता है। आशा है कि अब से तुम भी प्रात:काल नियमित रूप से भ्रमण करोगी। पूज्य माता एवं पिता जी को चरण स्पर्श कहना। शेष सब ठीक है। पत्रोत्तर शीघ्र देना।

तुम्हारा अग्रज

य०र०ल०

2. परीक्षा भवन

आगरा

8 अक्टूबर, 20XX

सेवा में

प्रधानाचार्य महोदय

क.ख.ग विद्यालय

आगरा।

विषय: रक्तदान शिविर आयोजित करने के संबंध में।

महोदय

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय की दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। हमारा विद्यालय इस क्षेत्र का एक प्रतिष्ठित विद्यालय माना जाता है। शैक्षिक उपलब्धियों के साथ-साथ हमारे विद्यालय ने सामाजिक- सांस्कृतिक आयोजनों में भी बढ़-चढ़कर भाग लिया है। किंतु अब तक हमारे विद्यालय में एक बार भी रक्तदान शिविर का आयोजन नहीं किया गया है। महोदय,

रक्तदान महादान है। इससे हज़ारों लोगो की जान बचती है। इससे बड़ा पुनीत कार्य कुछ भी नहीं हो सकता। अपने विद्यालय की प्रतिष्ठा के अनुरूप हम सभी छात्रों एवं शिक्षकों को स्वैच्छिक रक्तदान अवश्य ही करना चाहिए। अत: श्रीमान से अनुरोध है कि रक्तदान की महत्ता को ध्यान में रख रेडक्रॉस सोसाइटी से अपने विद्यालय में रक्तदान शिविर लगाने का अनुरोध करें।

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

य०र०ल०

अथवा

अ०ब०स० नगर

नई दिल्ली

12 दिसंबर 20XX

सेवा में

संपादक

दैनिक हिंदुस्तान

कस्तूरबा गांधी मार्ग

नई दिल्ली।

विषय: बिजली संकट और उससे उत्पन्न कठिनाइयों के संबंध में।

महोदय

मैं आपके सम्मनित एवं लोकप्रिय पत्र के माध्यम से संबंधित अधिकारियों-कर्मचारियों का ध्यान बिजली संकट तथा उनसे उत्पन्न कठिनाइयों के संबंध में आकृष्ट करना चाहता हूँ।

महोदय, पिछले कई महीनों से हमारे क्षेत्र में बिजली की भीषण किल्लत बनी हुई है। कुल चौबीस घंटे में छ-सात घंटे भी बिजली नहीं मिल पाती। इसके कारण हमारे क्षेत्र में समस्याओं की बाढ़-सी आ गई है। बच्चो की पढ़ाई-लिखाई ठप्प है, पानी की कमी के कारण दैनंदिन के क्रियाकलाप बुरी तरह से प्रभावित हैं। गरमी के कारण क्षेत्र के लोग रात भर जगकर बिताते हैं। रात में बिजली नहीं रहने के कारण सर्वत्र अँधेरा रहता है, जिसके कारण चोर-उच्चकों की पौ बारह है। अत: आपसे अनुरोध है कि इसे अपने समाचार-पत्र में स्थान दें ताकि संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारीगण इस समस्या पर ध्यान देकर इसके समाधान में रुचि लें।

सधन्यवाद

भवदीय

य०र०ल०

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–17

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–18

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–19

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–20

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–21

उत्तर–

1. 'पल्स पोलियो' अभियान हेतु विज्ञापन।

'पल्स पोलियो' अभियान को सफल बनाइए,
बच्चों को पल्स पोलियो की खुराक पिलाए!

पल्स पोलियो
अभियान

पल्स पोलियो कार्यकर्ता अथवा अपने निकटतम स्वास्थ्य केंद्र की सेवाएँ लीजिए।

स्वस्थ भारत, श्रेष्ठ भारत

2. 'बचपन' एन०जी०ओ० के विभिन्न पदों हेतु आवेदन आमंत्रित करते हुए विज्ञापन।

बच्चों के स्वस्थ तथा रचनात्मक विकास हेतु सतत क्रियाशील संस्था

बचपन

हेतु विभिन्न पदों के लिए आवेदन-पत्र आमंत्रित किए जाते हैं–

- परामर्शदाता (योग्यता–एम०ए० (मनोविज्ञान), आयु (18-36)
- समन्वयक (योग्यता–स्नातक, आयु 18-30)
- सहायक (योग्यता–स्नातक, आयु 18-30)
- भंडारपाल (योग्यता–मैट्रिक, आयु 18-30)
- आदेशपाल (योग्यता–आठवीं पास, आयु (18-30)

इच्छुक उम्मीदवार निम्नलिखित पते पर अपना आवेदन भेज सकते हैं–

निदेशक
बचपन
11, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली।
फोन–986840XXXX; 979811XXXX

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–22

उत्तर–

1. सामाजिक जागरूकता पर आधारित विज्ञापन–'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'।

"बेटी हम सबके जीवन का मूल है।
उसे मारना मानवता की भूल है।।"

बेटी बचाओ,
बेटी पढ़ाओ!

"जड़ता छोड़ करो स्वीकार। शिक्षा है बेटी का अधिकार।।"

2. गुमशुदा छात्र की तलाश के लिए विज्ञापन।

गुमशुदा छात्र की तलाश

नाम	–	दिवाकर पंडित
पिता का नाम	–	सूर्यदेव पंडित
थाना	–	सराय इनायत
जिला	–	इलाहाबाद
पहनावा	–	स्कूल ड्रेस-नीली पैंट व सफ़ेद कमीज़
हुलिया	–	गोरा रंग, चेहरा गोल
उम्र	–	16 वर्ष

दिनांक 9 सितंबर, 20XX को समय प्रातः छह बजे घर से स्कूल के लिए निकला था। अभी तक वापस नहीं आया। उक्त लड़के के बारे में जानकारी देनेवाले को इनाम दिया जाएगा।

जानकारी देने के लिए संपर्क करें–पुलिस स्टेशन सराय इनायत
फोन नं०: 983654XXXX

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–23

उत्तर–

1. अपने रिश्तेदार को कोरोना से सतर्क करते हुए संदेश–

संदेश

अपराह्न: 4 बजे

14-09-20XX

मामा जी

वैश्विक महामारी कोरोना से बचाव ही इसका सर्वाधिक प्रभावी उपचार है। अतः आपसे अनुरोध है कि आप सामाजिक दूरी का पालन करें तथा मास्क अवश्य लगाएँ, क्योंकि हमें सदैव आपके स्वास्थ्य की चिंता रहती है। ईश्वर से यही प्रार्थना करता रहता हूँ कि आप स्वस्थ रहें।

ईशान

2. अपने दोस्त को क्रिसमस के उपलक्ष्य में शुभकामना संदेश–

संदेश

पूर्वाह्न: 11 बजे

23.12.20XX

राबर्ट

तुम्हें क्रिसमस की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। प्रभु यीशु से यही प्रार्थना है कि वे तुम्हारी ज़िंदगी को खुशियों व मिठास से भर दे। एक बार फिर तुम्हारे समस्त परिवार को क्रिसमस की ढेर सारी शुभकामनाएँ।

सलीम

पुनरावृत्ति कार्य पत्र–24

उत्तर– विद्यार्थी स्वयं करें।

❑❑❑